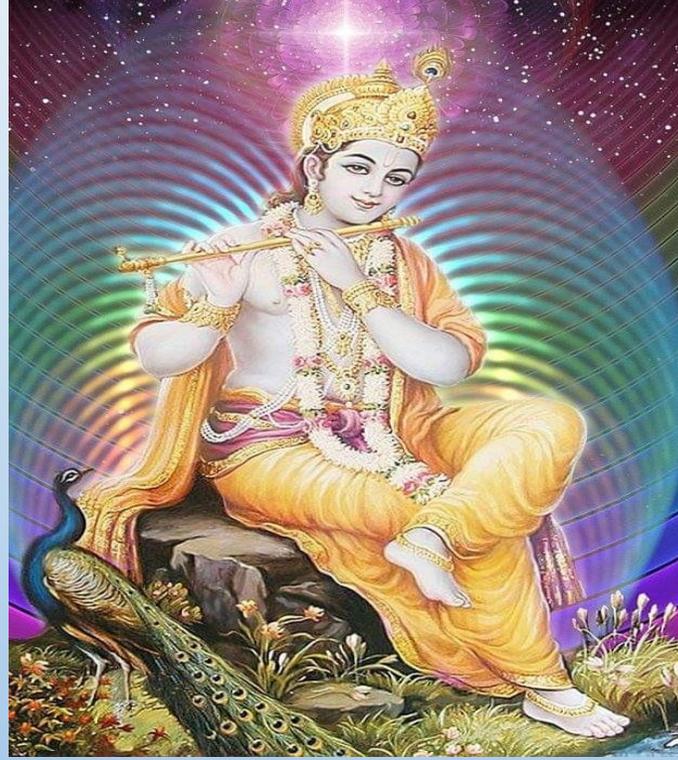


पांच स्वरूप की याद के पच्चीस मुद्दे



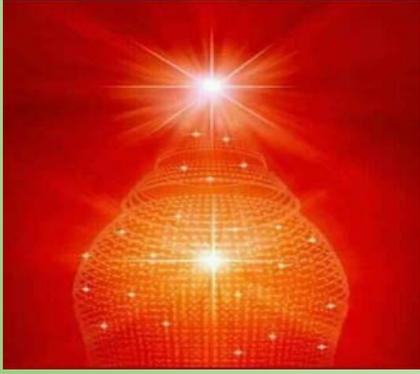
ब्रह्माकुमारिज्ञ
प्रस्तुती

ब्र. कु. प्रफुल्लचंद्र



पांच स्वरूप

बिज स्वरूप



देवता स्वरूप



पूज्य स्वरूप



ब्राह्मण स्वरूप

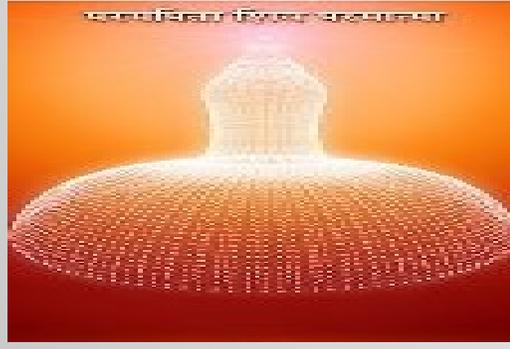


फ़रिश्ता स्वरूप



पांच स्वरूप के पांच धाम

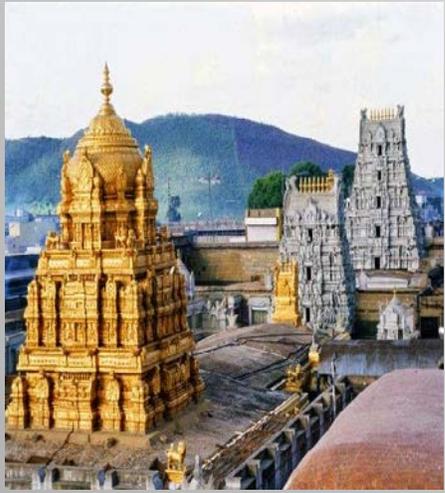
बिज स्वरूप – परमधाम



देवता स्वरूप – सुखधाम

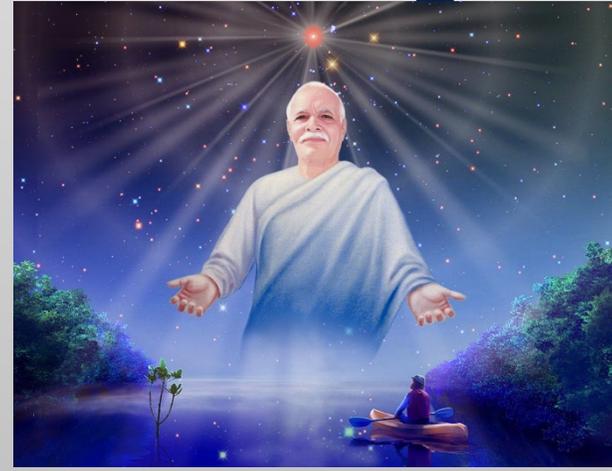


पूज्य स्वरूप-भक्ति धाम



ब्राह्मण स्वरूप-संगमधाम

फरिस्ता स्वरूप-सुक्ष्मधाम

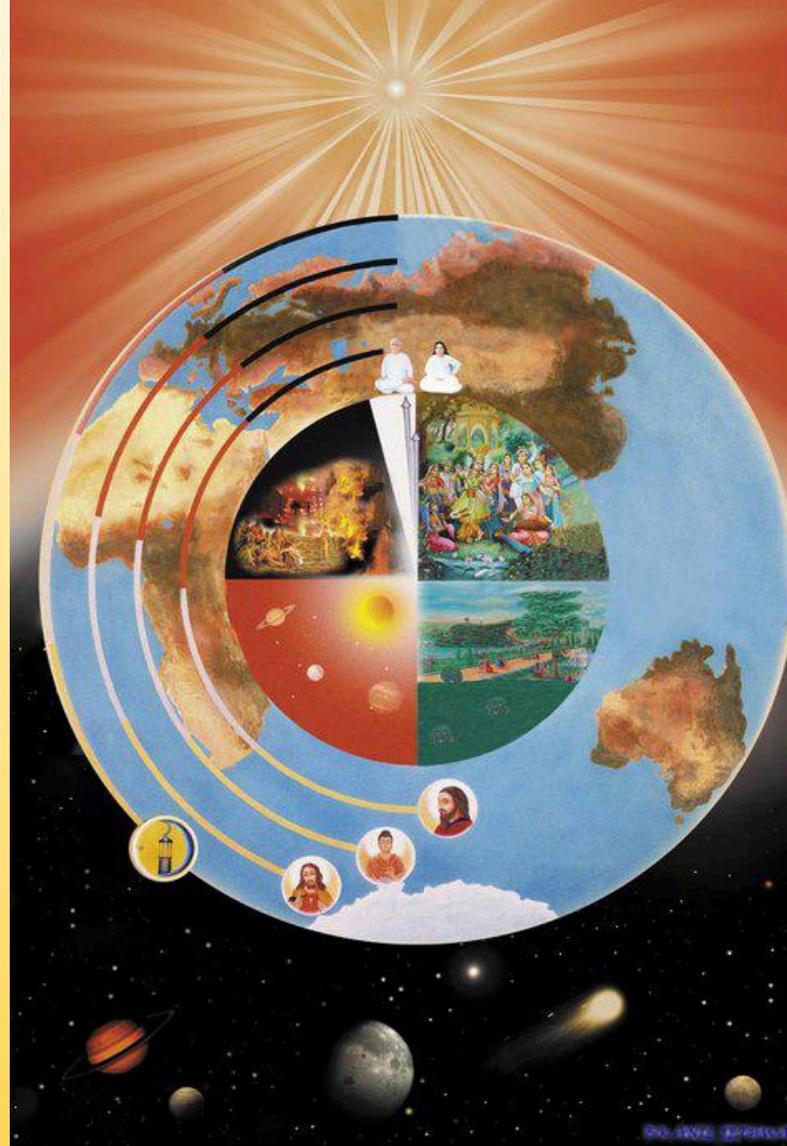


पांच स्वरूप के पांच समय

फरिस्ता स्वरूप-अनंत
कालातित

ब्राह्मण स्वरूप-अंत काल
कालाधीन

पूज्य स्वरूप-मध्य काल
कालाधीन



बिज स्वरूप - अनादी
कालातित

देवता स्वरूप-आदि काल
कालाधीन

पांच स्वरूप की पांच अवस्था

बिज स्वरूप निराकारी



पूज्य स्वरूप-अलंकारी

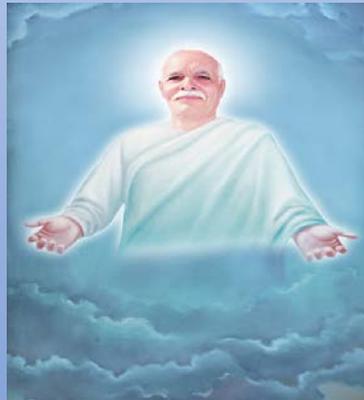


देवता स्वरूप-निर्विकारी



ब्राह्मण स्वरूप-निरहंकारी

फरिस्ता स्वरूप-आकारी



पांच स्वरूप की पांच अनुभूति

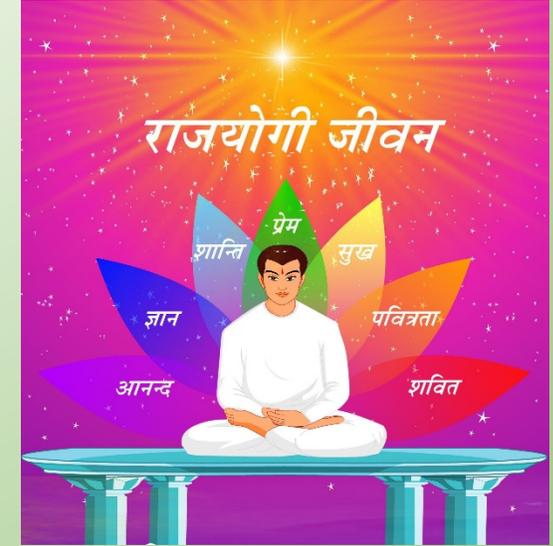
बिज स्वरूप – शान्ति

देवता स्वरूप – सुख

पूज्य स्वरूप – प्रेम

ब्राह्मण स्वरूप – शक्ति

फरिस्ता स्वरूप – आनंद



स्वरूप	धाम	काल	अवस्था	अनुभूति
बिज	परमधाम	अनादि	निराकारी	शान्ति
देवता	सुखधाम	आदि	निर्विकारी	सुख
पूज्य	भक्तिधाम	मध्य	अलंकारी	प्रेम
ब्राह्मण	संगमधाम	अंत	निरहंकारी	शक्ति
फरिस्ता	सूक्ष्मधाम	अनंत	आकारी	आनंद

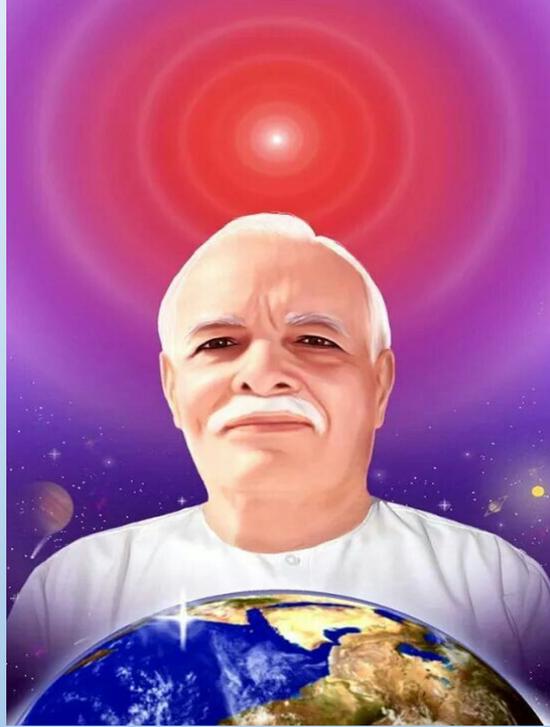
पांच स्वरूप के योगाभ्यास के क्रमिक सोपान

- ❖ शरीरभान से मुक्त हो कर, अपनी आत्मिक स्मृति में स्थित हो कर, अपने स्वधर्म में स्थित होना है और अपनी शाश्वतता का अनुभव करना है ।
- ❖ स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर को बुद्धि से पीछे छोड़ते हुए अपनी बीजरूप स्थिति में अंतरिक्ष यात्रा का आनंद लुटते हुए परमधाम पहुंचना है ।
- ❖ परमधाममें स्थित हो कर अपने अनादी, कालातित, निराकारी, बिजस्वरूप का अनुभव करना है । परमधाम की नीरव शान्ति एवं मुक्ति का अनुभव करना है ।
- ❖ सृष्टिचक्र के आदि समय पर परमधाम से एक चमकते सितारे के रूपमें अवतरित हो कर अपने देवता स्वरूप में स्थित होना है और अपने निर्विकारी अवस्था का एवं सुखधाम के परमसुख का अनुभव करना है ।
- ❖ द्वापरयुग के मध्य कालीन समय पर अपने अलंकारि पूज्य स्वरूप को इमर्ज कर भक्तों के प्रेम की गहन अनुभूति करनी है और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण हो ऐसी शुभभावना अभिव्यक्त करनी है ।

- ❖ सृष्टिचक्र के अंतिम समय पुरुषोत्तम संगमयुग पर अपने निरहंकारी ब्राह्मण स्वरूप को इमर्ज कर, अपनी आत्मा का बाबा के सानिध्य मे सशक्तिकरण एवं दिव्यीकरण हो रहा है एसा अनुभव करना है ।
- ❖ अपने फरिस्ता स्वरूप को इमर्ज कर सूक्ष्मधाम में स्थित हो कर अपनी आकारी अवस्था की अनंतता एवं परमानंद का अनुभव करना है।
- ❖ गीत : आये अनुभव करे आत्म दर्शन करे अपने पांचो स्वरूपों का चिंतन करे

<https://youtu.be/PIXvYILd5kA>

ॐ शांति



धन्यवाद